अतिशय क्षेत्र शहडोल के बड़ेबाबा

श्री नमिनाथ

ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री नमिनाथ ऋद्धि विधान/दीप अर्चना
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
लागत मूल्य	:	भक्ति-आराधना
प्रकाशक	:	विद्यासुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 2. अरिहंत जैन सागर 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक (परिवार)

श्री शुभचन्द्र जैन (समाधिस्थ क्षुल्लक श्री शुभसागरजी)
की पावन स्मृति में-
श्रीमती शशि जैन एवं समस्त राजकमल परिवार
शहडोल (म.प्र.)

श्रीधर्मचंद जी एवं श्रीसुभाषचंदजी नायक की स्मृति में-
श्रीमती राजकुमारी, विकास-श्रीमती विधि,
अर्चित, अर्चिता नायक जैन शहडोल (म.प्र.)

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस तरह भक्तामर स्तोत्र के द्वारा श्री वृषभदेव की भक्ति दीप अर्चना के माध्यम से की जाती है उसी तरह चैतन्य चमत्कारी श्री नमिनाथ भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति **'श्री नमिनाथ ऋद्धि विधान/दीप अर्चना'** की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है। श्रद्धा के साथ भक्ति की भावना से 48 अर्घ्य/दीपों के साथ अथवा एक दीप के साथ यह आराधना करने से सभी इष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा. ब्र. संजय, मुरैना

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लो, सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥ 1॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥ 2॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥ 4॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिए हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।

वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ 8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ 9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं---।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं---)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (दोहा)

सुपार्श्वप्रभु की विश्व में, लीला अपरम्पार।
पूजक बनके पूज्य फिर, चलें मोक्ष के द्वार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥

अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

रत्नों जैसा अर्घ्य न मेरा, सुर छन्दों मय वचन नहीं।
भाव भक्ति भी दिखा न सकता, गुण गाने का यतन नहीं
फिर भी अनर्घपद को पाने, सादर अर्घ्य समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

दुनियाँ में जड़ वस्तु पाके, हमने उनका मूल्य किया।
किंतु आप ने इन्हें त्यागकर, निज चेतन बहुमूल्य किया॥
हम भी हों बहुमूल्य आप सम, अतः अर्घ्य यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचबालयति अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

मूल्यवान जग का यह वैभव, क्षणिक सुखी भर कर सकता।
किन्तु अनन्त सुखी बनने यह, तजने की आवश्यकता॥

दयानिधे! निज शक्ति प्रकट हो, अतः अर्घ्य यह भेंट करें॥
वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व, महावीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य

(शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-

चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-खंदारजी-चंदेरी-हाटकापुरा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे-भरतक्षेत्रे-आर्यखण्डे-भारतदेशे-मध्यप्रदेशे-.....जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे..मुनि-आर्यकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधिं विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें।)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

===

भजन

(लय-देखौ-देखौ जो कलयुग कौ हाल...)

अइऔ-अइऔ हमारे शहडोल, विराट राजा की नगरी॥
इतै तीन शिखरों को मंदिर, खूब बड़ौ है प्यारौ।
पार्श्वनाथ को बड़ौ मंदिर, नमिनाथ को द्वारौ॥
विद्यागुरु वर को अपनौ शहडोल, विराट राजा की नगरी।
अइऔ-अइऔ हमारे शहडोल....।
जब अज्ञात वास में पाण्डव, ये शहडोल पधारे।
तबई तीन सौ पैंसठ खोदे, ताल तलैया न्यारे॥
तब से हो गओ प्रसिद्ध शहडोल, विराट राजा की नगरी।
अइऔ-अइऔ हमारे शहडोल....।
इते एक छोटौ मंदिर हूँ, जिते चन्द्र प्रभु शोभे।
महावीर संग्रहालय वाली, हर प्रतिमा मन मोहै ॥
'सुव्रतसागर' खो भा गऔ शहडोल, विराट राजा की नगरी।
अइऔ-अइऔ हमारे शहडोल....।

===

अँधेरे में छाया
बुढ़ापे में काया
और
अंत में माया
किसी का साथ
नहीं देती।

अतिशयक्षेत्र शहडोल के बड़ेबाबा
श्री नमिनाथ भगवान की स्तुति

(सखी)

शहडोल नगरिया के, अतिशयकारी नमिनाथ।
सब पर तो कृपा करते, दो हमको आशीर्वाद॥
प्रभु सिर पर रख दो हाथ।
भूगर्भ न भाया तो, कुछ सपने से देकर।
शहडोल नगर प्रकटे, अतिशय से दिखलाकर॥
इस पावन तीरथ पर, हम करते नमोऽस्तु आज।
शहडोल नगरिया के, अतिशयकारी नमिनाथ॥
सब पर तो कृपा करते, दो हमको आशीर्वाद।
प्रभु सिर पर रख दो हाथ॥1॥
भगवन अतिशयकारी, हो पद्मासन धारी।
देवों के देव तुम्हीं, सुंदर परिकरधारी॥
सबकी तो सुनते हो, प्रभु सुनो हमारी बात।
शहडोल नगरिया के, अतिशयकारी नमिनाथ॥
सब पर तो कृपा करते,दो हमको आशीर्वाद।
प्रभु सिर पर रख दो हाथ॥2॥
हैं तीन छत्र सिर पर, त्रय जग के नेता हो।
चरणों में कमलासन, चारित्र विजेता हो॥
सिंहासन पर आसीन, रहते भक्तों के साथ।
शहडोल नगरिया के, अतिशयकारी नमिनाथ॥
सब पर तो कृपा करते, दो हमको आशीर्वाद।
प्रभु सिर पर रख दो हाथ॥3॥

जब से प्रभु प्रकट हुए, तब सब खुशहाल हुए।
जो श्रद्धालु तेरे, वे मालामाल हुए॥
क्या रोग शोक उनको, जिन पर है तेरा हाथ।
शहडोल नगरिया के, अतिशयकारी नमिनाथ॥
सब पर तो कृपा करते, दो हमको आशीर्वाद।
प्रभु सिर पर रख दो हाथ॥4॥
सुख शान्ति मिले उनको, जो नाम आपका लें।
वो ऋद्धि-सिद्धि पाकर, अपनी मंजिल पा लें॥
'सुव्रत' 'विद्या' पाएँ, बस करते रहें प्रभु जाप।
शहडोल नगरिया के, अतिशयकारी नमिनाथ॥
सब पर तो कृपा करते, दो हमको आशीर्वाद।
प्रभु सिर पर रख दो हाथ॥5॥

===

दीप अर्चना/विधान करने के लिए

स्वस्तिक बनाकर प्रत्येक बिन्दु पर एक-एक दीपक या अर्घ्य समर्पित करते हुए 48 मंत्रों के साथ दीप अर्चना एवं विधान करना चाहिए।

श्री नमिनाथ ऋद्धि विधान

स्थापना (ज्ञानोदय)

पूज्य बड़े बाबा जी अपने, तुम बिन चैन न जब पाए।
देवों ने भूगर्भ धाम से, तब भगवन को प्रकटाए॥
सुन्दर-सुन्दर अतिशयकारी, पद्मासन परिकरधारी।
तब से अब तक पूज रहे हैं, श्रद्धालु हर नर-नारी॥
पूज्य कुठरिया वाले बाबा, तब से ही विख्यात हुए।
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि दाता, हम भक्तों के ठाठ हुए॥
पूजन के हम भाव संजोए, स्वीकारो आमंत्रण जी ।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥

(दोहा)

प्रथम-प्रथम आराध्य हैं, परम पूज्य नमिनाथ।
हृदय वसो सुख शान्ति दो, सो नमोऽस्तु नतमाथ॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्र समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वानं । अत्र तिष्ठ- तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पांजलिं...)

प्रकट हुए होंगे जब भगवन, तब आँखें झलकीं होंगी।
पुण्य दृश्य वो मिला न हमको, जलधारा जब की होंगी॥
करें शान्तिधारा हम वैसी, ज्यों जल धारा गंगा की।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों नमिनाथ प्रभु प्रकटे तो, चारों ओर खबर फैली।
जय-जयकारे गूँजें होंगे, चंदन सी खुशबू फैली॥

चंदन जैसी छत्र-छाँव में, पाएँ परमानंदा जी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धरती के अंदर भी प्रतिमा, रखी सुरक्षित देवों ने।
सपने देकर फिर प्रकटा कर, महिमा गाई देवों ने॥
भक्ति हमारी कभी न कम हो, मिले आपका संगा जी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

एक सूत के धागे से जब, फूलों से भगवान चले।
रोग शोक दुख हर्ता प्रभु के, दर्शन को दुनियाँ मचले॥
खिलते रहें फूल जैसे हम, हो जाए मन चंगा जी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

खाते पीते तो हैं लेकिन, सब भगवान बिना रोते।
फिर शहडोल नगर में सुनलो, भगवन के अतिशय होते॥
राज रसोड़ों का क्या कहना, बने चेतना लाडू सी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झालर घण्टी बजा-बजा के, दीपक देव जलाते हैं।
दर्शन पूजन करें आरती, अतिशय खूब दिखाते हैं॥

समाधान दें हरें समस्या, झलकाएँ निज ज्योति सी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त यहाँ सब कार्य करें पर, सदा आपकी बोलें जय।
करके पूजन दान धर्म से, जिनशासन की करें विजय॥
चरणों में चैतन्य मनाए, उत्सव रंग विरंगा जी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण नमिनाथ आपका , मंदिर अतिशयकारी है।
मंशापूरक विघ्न विनाशी, तीन शिखर का धारी है॥
हारों का है यही सहारा, देता सुख आनंदा जी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम हैं दास आप हैं स्वामी, अपनी जोड़ी बनीं रहे।
जैसा रखना रख लो लेकिन, कृपा भक्त पर घनीं रहे॥
आतम को परमातम करके, कर दो सिद्ध महंता जी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

क्वाँर कृष्ण की दूज को, तज अपराजित स्वर्ग।
आए प्रभु नमिनाथ जी, वप्पिला माँ के गर्भ॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें कृष्ण आषाढ़ को, जन्मे प्रभु नमिनाथ।
लड्डू राजा विजय ने, बाँटे-नाँचे साथ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संत जन्म तिथि में बने, पा रत्नत्रय वस्तु।
निर्ग्रन्थी नमिनाथ को, बारम्बार नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, हुआ ज्ञान कल्याण।
परमपिता नमिनाथ को, दुनियाँ करे प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्ण वैशाख को, मोक्ष गए नमिनाथ।
शिखर मित्रधरकूट को, नमन करें नत माथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नमिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

प्रथम-प्रथम आराध्य हैं, परम पूज्य नमिनाथ।
हृदय वसो सुख शान्ति दो, सो नमोऽस्तु नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो ! अतिशयकारी, पद्मासन परिकरधारी।
पूज्य कुठरिया वाले बाबा, सुन्दर-सुन्दर मनहारी॥
दर्शन कर हम करें नमोऽस्तु, पाने को आनन्दा जी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥1॥
जब शहडोल नगर के वासी, आकुल-व्याकुल थे हैरान।
बिना देव दर्शन पूजन के, कैसे करलें भोजन-पान॥
विघ्न विनाशक संकटमोचक, तब प्रकटे अरिहन्ता जी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥2॥
एक सूत के धागे से बस, प्रतिमा ऊपर आयी थी।
चमत्कार अतिशय की महिमा, देवों ने भी गायी थी॥
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि दाता, देते परमानंदा जी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥3॥
करें आरती दीप जलाएँ, देव आपके चरणों में।
यहाँ थकान मिटी है उनकी, जो आते हैं शरणों में॥
हारे के हैं आप सहारे, हम सबके आनंदा जी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥4॥
एक तरफ तो दुनियाँ के हर, भोग यहाँ पर मिलते हैं।
अन्य तरफ आतम परमातम, बाग यहीं पर खिलते हैं॥
चरणों में स्थान मिले बस, दो 'सुव्रत' आनंदा जी।
सो शहडोल नगर के स्वामी, जय नमिनाथ जिनन्दा की॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

नमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, नमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(हाकलिका)

इन्द्री कर्म विजेता जो, मोक्षमार्ग के नेता वो।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं विघ्न विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 1॥

अवधिज्ञान के स्वामी हैं, सुंदर अंतरयामी हैं।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं सर्वरोग विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 2॥

परमावधि के धारी हो, दाता अतिशयकारी हो।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं सुज्ञान प्रकाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 3॥

सर्वावधि के ईश तुम्हीं, देते हो आशीष तुम्हीं।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं दु:ख विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 4॥

तुम्हीं अनंतावधि ज्ञानी, मुक्तिवधू के वरदानी।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं कार्य सिद्धि कारक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 5॥

कोष्ट बुद्धि के धारक हो, भक्तों के भी तारक हो।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं शक्ति प्रदायक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 6॥

बीज बुद्धि के हो धाता, श्रद्धालु के वरदाता।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं कष्ट विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 7॥

पदानुसारी मंत्र दिए, जिनशासन जयवंत किए।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं संकटमोचक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 8॥

(शुद्ध गीता)

सुनो! संभिन्नश्रोतृ से, जिन्होंने दुख नशाए हैं।
महाभारत तरह के भय, जिन्हें छूने न पाए हैं॥
जिन्होंने प्रार्थना सुनकर, सहारा दे दिया सबको।
उन्हीं नमिनाथ स्वामी को, हमारा भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं इष्टफल प्रदाता क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 9॥

जिन्हें संसार की माया, न छू सकती है सपने में।
बने वो ही स्वयंभू जो, लगाएँ चित्त अपने में॥

जिन्होंने अर्चना सुनकर, किनारा दे दिया सबको।
उन्हीं नमिनाथ स्वामी को, हमारा भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं स्मृति विकाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 10॥

महाव्रत आचरण कर जो, जगत के कष्ट हरते हैं।
वही प्रत्येक बुद्ध उनको, महा ऋषिराज कहते हैं॥
जिन्होंने वंदना सुनकर, उजाला दे दिया सबको।
उन्हीं नमिनाथ स्वामी को, हमारा भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं संतुष्टि कारक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 11॥

जिन्होंने थामकर ऊँगली, हमें चलना सिखाया हैं।
कि बोधित बुद्ध हैं वो तो, उन्हीं में सुख समाया हैं॥
जिन्होंने वेदना सुनकर, ठिकाना दे दिया सबको।
उन्हीं नमिनाथ स्वामी को, हमारा भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं मनोकामना पूरक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 12॥

(चौपाई)

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय जो, विघ्न विनाशक देता जय को।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं लक्ष्मी प्रदायक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 13॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय जो, दिग्दर्शक दे आत्म निलय को।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं भय विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 14॥

दस पूर्वों को धार रहे जो, ज्ञान दान दे तार रहे जो।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं मनोबल प्रदायक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 15॥

चौदह पूर्वों के अभियंता, मोक्षनगर के सिद्ध महंता।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं परतंत्रता नाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 16॥

प्रभु अष्टांग निमित्त निखारें, भक्त आपके पाँव पखारें।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं पापान्धकार विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 17॥

तुम्हीं विक्रिया ऋद्धि सँभाले, सबको उत्सव देने वाले।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं सौभाग्य प्रकाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 18॥

नर विद्याधर संयमधारी, सबके स्वामी अतिशयकारी।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं मनोविकार नाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 19॥

चारण ऋद्धीश्वर विज्ञानी, रोग-शोक हर्त्ता वरदानी।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं अज्ञान विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 20॥

प्रज्ञा श्रमण तुम्हीं कहलाते, देकर ज्ञान मार्ग दिखलाते।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं सर्व दोष विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 21॥

गगन विहारी कमल विहारी,नाथ! आप हो अतिशयकारी।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं अवगुण विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 22॥

(दोहा)

आशीर्विष को धारकर, दूर किए विषपान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं भूतप्रेतादि बाधा विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 23॥

दृष्टिर्विष को धारकर, दे डाले वरदान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं शिरोरोग विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 24॥

उग्र तपों को धारकर, कर डाले कल्याण।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं दृष्टि दोष विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 25॥

दीप्त तपों को धारकर, पाए केवलज्ञान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं यश प्रदायक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 26॥

तप्त तपों को धारकर, पा बैठे निर्वाण।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं शत्रुप्रभाव विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 27॥

महा तपों को धारकर, दूर करे अज्ञान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं शोक विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 28॥

घोर तपों को धारकर, हरे कर्म तूफान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं पराजय विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 29॥

घोर गुणों को धारकर, किए भेद विज्ञान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं विजय प्रदायक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 30॥

घोर पराक्रम धारकर, विजय किए अपमान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं अपमान विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 31॥

घोर ब्रह्मगुण धारकर, किए बह्म रसपान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं संतानादि संपत्ति सुख प्रदायक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 32॥

(सखी)

आमर्ष औषधी धारी, छूकर हर लो बीमारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं सम्मान प्रदायक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 33॥

प्रभु खेल्ल औषधी धारी, दुख रोग शोक हर्त्तारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं शरण प्रदाता क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 34॥

प्रभु जल्ल औषधी धारी,जिन स्वस्थ करो संसारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं शान्ति प्रदाता क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 35॥

प्रभु विप्रुष औषधी धारी, कर दो सुन्दर सुखकारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं दरिद्रता विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 36॥

प्रभु सर्व औषधी धारी, सब पूज रहे नर नारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं महामारी विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 37॥

प्रभु सकल मनोबल धारी, संबल साहस दातारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं मूढ़ता विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 38॥

(अर्ध-विष्णु)

वचन दोष सम्पूर्ण मिटाएँ, वचन बली आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं जलोपद्रव विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 39॥

शौर्य शक्ति सम्पन्न बनाएँ, काय बली आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं दुर्बलता विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 40॥

नीर-क्षीर का गुण सिखलाएँ, क्षीरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं सर्पादि भय विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 41॥

घी जैसा आतम झलकाएँ, सर्पिस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं युद्धादि भय विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 42॥

कड़वा तीखा पाठ नशाएँ, मधुरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं पशु विघ्न विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 43॥

अजर-अमर ज्ञानामृत जैसा, अमृतस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं विपत्ति विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 44॥

दें अक्षीण महानस आलय, निज घर रस आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं जलोदरादि रोग विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 45॥

दें सर्वोच्च सफल उन्नत गुण, वर्धमान आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं बंधन भय विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 46॥

सिद्धालय दें सिद्ध आयतन, सिद्ध शिला आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं शस्त्रादि विघ्न विनाशक क्लीं महा-बीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 47॥

णमो लोए सव्वसाहूणं मय, णमोकार आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्व सिद्धि दायक विघ्न क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ 48॥

श्री वृषभनाथ वेदी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

भारतदेश तीर्थ क्षेत्रों में, जितने बिम्ब विराजित हैं।
उन सब में शहडोल नगर के, वृषभनाथ मन मोहक हैं॥
बिम्ब एक सौ आठ साथ में, सब प्रतिमाएँ शोभें जी।
वृषभनाथ शहडोल नगर के, कर नमोऽस्तु हम पूजें जी॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र शहडोल विराजित सहनायक श्री वृषभनाथ एवं सकल जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

श्री चन्द्रप्रभु वेदी अर्घ्य

चन्द्रप्रभु की चन्दा जैसी, मूरत बड़ी मनोहर है।
पद्मासनी सौम्य मुद्रा तो, अपनी धन्य धरोहर है॥
वेदी में जो बिम्ब विराजित, सब प्रतिमाएँ शोभें जी।
चन्द्रप्रभु शहडोल नगर के, कर नमोऽस्तु हम पूजें जी॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र शहडोल विराजित सहनायक श्री चन्द्रप्रभ एवं सकल जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

श्री नमिनाथ वेदी अर्घ्य

मूँगावर्णी नमिनाथ जी, पार्श्व सुपारस साँवलिया।
पद्मासन में आदमकद में, देते हैं दीपावलियाँ॥
चौबीसी के साथ वेदी में, सब प्रतिमाएँ शोभें जी।
नमि-पार्श्व शहडोल नगर के, कर नमोऽस्तु हम पूजें जी॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र शहडोल विराजित सहनायक श्री नमिनाथ-सुपार्श्वनाथ-पार्श्वनाथ एवं सकल जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबलीवेदी अर्घ्य

आदि भरत प्रभु बाहुबली की, उज्ज्वल खडगासन धारी।
आदमकद की प्रतिमाएँ जो, हरें मानसिक बीमारी॥
वेदी में जो बिम्ब विराजित, सब प्रतिमाएँ शोभें जी।
आदि भरत शहडोल नगर के, कर नमोऽस्तु हम पूजें जी॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र शहडोल विराजित सहनायक श्री वृषभनाथ-भरत-बाहुबली एवं सकल जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ वेदी अर्घ्य

शान्ति कुन्थु अरनाथ जिनेश्वर, आदमकद खडगासन में।
रत्नों जैसे उज्ज्वल-उज्ज्वल, दिये शान्ति धन जीवन में॥
वेदी में जो बिम्ब विराजित, सब प्रतिमाएँ शोभें जी।
शान्ति-कुन्थु शहडोल नगर के, कर नमोऽस्तु हम पूजें जी॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र शहडोल विराजित सहनायक श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ एवं सकल जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

नमिनाथ तीर्थंकर प्रभु, शहडोल के भगवान हैं।
सुख शान्ति ऋद्धि-सिद्धि दाता, भक्त जन के प्राण हैं॥

कल्याण अपना कर सकें, संसार पर ना भार हों।
पूर्णार्घ्य ले सबको नमोऽस्तु, नित्य बारम्बार हों॥

(दोहा)

परम पूज्य नमिनाथ जी, करो जगत उद्धार।
'सुव्रत' तो सादर करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय एवं सकल जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, शुद्धातम सरताज।
ऐसे प्रभु नमिनाथ को, करें नमोऽस्तु आज॥

(काव्य रोला)

करें नमोऽस्तु आज, काज केवल गुणगाना।
गुणगाने का राज, राज आतम का पाना॥
आतम पाके धाम, मोक्ष शाश्वत अपनाना।
शाश्वत नमि भगवान्, अतः सिर तुम्हें झुकाना॥

(ज्ञानोदय)

जय नमिनाथ परम अवतारी, आप अंत संसारी हो।
शुद्ध मोक्ष निज के रसिया पर, हितकारी संसारी को॥
अद्वितीय यह कला आपकी, खूब रुचे संसारी को।
चरण-शरण में रहे कहे गुण, रह न सके संसारी वो॥ 1॥
पिछले भव सिद्धार्थ नाम के, राजा ने जिनदीक्षा ली।
तीर्थंकरप्रकृति बाँधी फिर, मृत्युमहोत्सव शिक्षा ली॥

अपराजित के स्वर्ग भोगकर, धरती पर अवतरित हुए।
तब मिथिला के राजा रानी, विजय वप्पिला जन्म दिए॥ 2॥
गर्भ जन्म के पर्व देव कर, नामकरण नमिनाथ किए।
ढाई हजार वर्ष का भोगा, कुमारकाल फिर राज्य किए॥
पाँच हजार वर्ष का भोगा, राज्यकाल फिर कर चिन्तन।
इस प्राणी ने स्वयं फँसाया, काल कोठरी में चेतन॥ 3॥
ज्यों पिंजड़े में पक्षी दुखिया, बँधा हुआ हाथी रोता।
त्यों विषयों में मस्त जीव यह, निज अध्यात्म तत्त्व खोता॥
विष्ठा के कीड़े के जैसे, पाप-राग नित करता है।
हाय! हाय! फिर आर्त रौद्र कर, बिन रत्नत्रय मरता है॥ 4॥
तब लौकान्तिक देव सराहे, नमिनाथ के चिंतन को।
जग तज बैठ मनोहर शिविका, स्वामी चले चैत्र-वन को॥
बने दिगम्बर धरती अम्बर, गूँजे जय-जयकारों से।
दंतराज के हुई पारणा, पंचाश्चर्य नगाड़ों से॥ 5॥
जब छद्मस्थ वर्ष नव बीते, तभी बकुल तरुतल में जा।
बेला का संकल्प निभाकर, केवलज्ञान लिया उपजा॥
समवसरण में दिव्य-देशना, 'पुण्यफला' ने दे डाली।
जिससे सबने राग-रमा की, भव पर्याय भुला डाली॥ 6॥
मरण-मूलधन लेकर प्राणी, कर्जदार हो मृत्यु का।
जन्म-जन्म में कष्ट भोगता, कर्ज बढ़ाए दुर्गति का॥
किन्तु जीव रत्नत्रय धन का, जब तक अर्जन करे नहीं।
तब तक मृत्यु साहुकार का, ब्याज मूलधन चुके नहीं॥ 7॥
अतः धारकर रत्नत्रय को, स्वस्थ बनो आतम-भोगी।
तत्त्व देशना ऐसी देकर, नाथ! बने प्रतिमायोगी॥
श्री सम्मेदशिखर से नमिजिन, चतुर्दशी को मोक्ष गए।
मोक्ष पर्व से पुण्य कमाकर, देव स्वर्ग को लौट गए॥ 8॥

इसी तीर्थ में ग्यारहवें जयसेन चक्रवर्ती जन्मे।
चौदह रत्न नवो निधियाँ थीं, दसों भोग थे जीवन में॥
इक दिन उल्कापात देखकर, राज-पाठ वैभव छोड़े।
तप करके अहमिन्द्र बने सो, तपोधनों को सिर मोड़ें॥ 9॥
ऐसे प्रभु नमिनाथ देव ने, हर कर्मों से युद्ध किया।
अहित जीतकर मुक्ति प्रीतकर, अपना आतम शुद्ध किया॥
जिनके दिल में नमिनाथ हैं, शुद्ध बुद्ध खुद बनते वे।
उन्हें रहे क्या बुध ग्रह पीड़ा, मोक्ष महल में वसते वे॥10॥
लेकिन दूरी मिटी न अपनी, लक्ष्य दूर है राह बड़ी।
छोटे से हम भक्तों के दिल, फँसे न जग में फिकर खड़ी॥
वैरी दुनियाँ नित मारे पर, उसका कुछ भी असर नहीं।
'सुव्रत' पर बस यही कृपा हो, जिसकी जग को खबर नहीं॥11॥

(सोरठा)

नीलकमल है चिह्न, तीर्थंकर नमिनाथ हो।
हम पर रहो प्रसन्न, निजानुभव को साथ दो॥
हे स्वामी! जिनदेव, स्वार्थ रहित ये भक्तियाँ।
करती हैं स्वयमेव, भक्त जगत् की मुक्तियाँ॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र शहडोल स्थित मूलनायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय एवं सकल जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री नमिनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

मंगलमय नमिनाथ हैं, करें सर्व उपकार।
आत्मज्ञान रस लीन हैं, भव-सागर के पार॥
जिनके चरण सरोज में, विनम्र चारों धाम।
तारण-तरण जहाज को, बारम्बार प्रणाम॥

(शंभु)

हे परम पूज्य नमिनाथ प्रभो! हे परमपूज्य जगनाथ प्रभो!
प्रभु लोक शिखर के तुम वासी, फिर भी घट-घट में वास करो॥
दुनियाँ के बन्धन टूट पड़े, जब नाम ध्यान में आता है।
दर्शन पूजन जप तप करके, हर आत्म बन्ध खुल जाता है॥
जब चरण-शरण तेरी हो तो, भव भोग शरीर रुचें कैसे।
हर पुण्य लगे सार्थक लेकिन, हम रहें आप बिन अब कैसे॥
इसलिए रचाई जिन-पूजन, बस अपनी पूर्ण मिटे दूरी।
नत माथ नमोऽस्तु करते हम, हो मनोकामना झट पूरी॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

सब पूज रहे प्रभु के चरणा, जिनसे मिलता निज रूप घना।
वह आतम का शृंगार करें, वह शीघ्र हमें भव पार करें॥
अब जन्म मृत्यु का दुख हरने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, जल स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

विपरीत समय में डर न उन्हें, जिन पर करुणा प्रभु बरसाते।
कर चारु चन्द्र सम चिन्तन वो, चैतन्य चिदातम निज ध्याते॥

कारुण्य धार वह पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, शीत् स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

आशीष आपका सब चाहें, जो हर लेता संकट आहें।
चित्–पिण्ड अखण्ड प्रदान करें, दें मोक्षमहल शाश्वत राहें॥
आशीष हाथ तेरा पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुंज स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अनकूल रहें प्रतिकूल रहें, यों रहें खुशी ज्यों फूल रहें।
सम्मान मिले अपमान मिले, बस प्रभु चरणों की धूल मिले॥
वह चरण धूल प्रभु की पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुष्प स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

इन नयन कटोरों में केवल, पकवान वसे भगवान् नहीं।
भगवान् बिना निजज्ञान नहीं, निजज्ञान बिना कल्याण नहीं॥
भगवान् वसो इन नयनों में, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, चरु स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

इस पाप अँधेरे के कारण, निज आत्मज्योति आच्छादित है।
जो करे आरती दीप जला, वह पाता ज्ञान प्रकाशित है॥
वह आत्म ज्योति प्रकटाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, दीप स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

निज-निधियों पर शिव-गलियों पर, अत्यन्त ठोस है कर्म शिला।
पर धूप-कुदाल लिया जिसने, निज-वैभव उसको शीघ्र मिला॥
वह कर्म शिला चटकाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, धूप स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भगवान् यही वरदान मिले, प्रभु शीघ्र हमें तुम अपना लो।
जो मोक्षसिंधु तक फैली है, उस जिन-गंगा में नहला लो॥
जिन से निज के प्रक्षालन को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, फल स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम अर्घ्य चढ़ाएँ गुण गाएँ, हम करें नमोऽस्तु जिन-सेवा।
क्या? इससे नाथ तुम्हें मिलता, पर हमें प्राप्त हो सुख मेवा॥
निज-मुक्ति भक्ति से पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, सब स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

क्वाँर कृष्ण की दूज को, तज अपराजित स्वर्ग।
आए प्रभु नमिनाथ जी, वप्पिला माँ के गर्भ॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें कृष्ण आषाढ़ को, जन्मे प्रभु नमिनाथ।
लड्डू राजा विजय ने, बाँटे, नाँचे साथ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संत जन्म तिथि में बने, पा रत्नत्रय वस्तु।
निर्ग्रन्थी नमिनाथ को, बारम्बार नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, हुआ ज्ञान कल्याण।
परमपिता नमिनाथ को, दुनियाँ करे प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्ण वैशाख को, मोक्ष गए नमिनाथ।
शिखर मित्रधरकूट को, नमन करें नत माथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, शुद्धातम सरताज।
ऐसे प्रभु नमिनाथ को, करें नमोऽस्तु आज॥

(काव्य रोला)

करें नमोऽस्तु आज, काज केवल गुणगाना।
गुणगाने का राज, राज आतम का पाना॥
आतम पाके धाम, मोक्ष शाश्वत अपनाना।
शाश्वत नमि भगवान्, अतः सिर तुम्हें झुकाना॥

(ज्ञानोदय)

जय नमिनाथ परम अवतारी, आप अंत संसारी हो।
शुद्ध मोक्ष निज के रसिया पर, हितकारी संसारी को॥
अद्वितीय यह कला आपकी, खूब रुचे संसारी को।
चरण-शरण में रहे कहे गुण, रह न सके संसारी वो॥1॥
पिछले भव सिद्धार्थ नाम के, राजा ने जिनदीक्षा ली।
तीर्थंकरप्रकृति बाँधी फिर, मृत्युमहोत्सव शिक्षा ली॥

अपराजित के स्वर्ग भोगकर, धरती पर अवतरित हुए।
तब मिथिला के राजा रानी, विजय वप्पिला जन्म दिए॥ 2॥
गर्भ जन्म के पर्व देव कर, नामकरण नमिनाथ किए।
ढाई हजार वर्ष का भोगा, कुमारकाल फिर राज्य किए॥
पाँच हजार वर्ष का भोगा, राज्यकाल फिर कर चिन्तन।
इस प्राणी ने स्वयं फँसाया, काल कोठरी में चेतन॥ 3॥
ज्यों पिंजड़े में पक्षी दुखिया, बँधा हुआ हाथी रोता।
त्यों विषयों में मस्त जीव यह, निज अध्यात्म तत्त्व खोता॥
विष्ठा के कीड़े के जैसे, पाप-राग नित करता है।
हाय! हाय! फिर आर्त रौद्र कर, बिन रत्नत्रय मरता है॥ 4॥
तब लौकान्तिक देव सराहे, नमिनाथ के चिंतन को।
जग तज बैठ मनोहर शिविका, स्वामी चले चैत्र-वन को॥
बने दिगम्बर धरती अम्बर, गूँजे जय-जयकारों से।
दंतराज के हुई पारणा, पंचाश्चर्य नगाड़ों से॥5॥
जब छद्मस्थ वर्ष नव बीते, तभी बकुल तरुतल में जा।
बेला का संकल्प निभाकर, केवलज्ञान लिया उपजा॥
समवसरण में दिव्य-देशना, 'पुण्यफला' ने दे डाली।
जिससे सबने राग-रमा की, भव पर्याय भुला डाली॥ 6॥
मरण-मूलधन लेकर प्राणी, कर्जदार हो मृत्यु का।
जन्म-जन्म में कष्ट भोगता, कर्ज बढ़ाए दुर्गति का॥
किन्तु जीव रत्नत्रय धन का, जब तक अर्जन करे नहीं।
तब तक मृत्यु साहुकार का, ब्याज मूलधन चुके नहीं॥ 7॥
अतः धारकर रत्नत्रय को, स्वस्थ बनो आतम-भोगी।
तत्त्व देशना एसी देकर, नाथ! बने प्रतिमायोगी॥
श्री सम्मेदशिखर से नमिजिन, चतुर्दशी को मोक्ष गए।

मोक्ष पर्व से पुण्य कमाकर, देव स्वर्ग को लौट गए॥ 8॥
इसी तीर्थ में ग्यारहवें जयसेन चक्रवर्ती जन्मे।
चौदह रत्न नवो निधियाँ थीं, दसों भोग थे जीवन में॥
इक दिन उल्कापात देखकर, राज-पाठ वैभव छोड़े।
तप करके अहमिन्द्र बने सो, तपोधनों को सिर मोड़ें॥ 9॥
ऐसे प्रभु नमिनाथ देव ने, हर कर्मों से युद्ध किया।
अहित जीतकर मुक्ति प्रीतकर, अपना आतम शुद्ध किया॥
जिनके दिल में नमिनाथ हैं, शुद्ध बुद्ध खुद बनते वे।
उन्हें रहे क्या बुध ग्रह पीड़ा, मोक्ष महल में वसते वे॥10॥
लेकिन दूरी मिटी न अपनी, लक्ष्य दूर है राह बड़ी।
छोटे से हम भक्तों के दिल, फँसे न जग में फिकर खड़ी॥
वैरी दुनियाँ नित मारे पर, उसका कुछ भी असर नहीं।
'सुव्रत' पर बस यही कृपा हो, जिसकी जग को खबर नहीं॥11॥

(सोरठा)

नीलकमल है चिह्न, तीर्थंकर नमिनाथ हो।
हम पर रहो प्रसन्न, निजानुभव को साथ दो॥
हे स्वामी! जिनदेव, स्वार्थ रहित ये भक्तियाँ।
करती हैं स्वयमेव, भक्त जगत् की मुक्तियाँ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(इन्द्रिय संयम के विरोधी 28 विषय)

(काव्य रोला)

संयम है सुखकार, जिसे गुणशीत सताये।
आप शीत को जीत, आत्म से प्रीत लगाए॥
स्पर्शन का गुण शीत, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं शीतप्रकोप-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 1॥

संयम मुक्ति-द्वार जिसे गुण उष्ण तपाए।
आप उष्ण को जीत, शुद्ध आतम प्रकटाए॥
स्पर्शन का गुण उष्ण, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं उष्णप्रकोप-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 2॥

संयम गुण भण्डार, जिसे गुण रूक्ष रुलाए।
आप रूक्ष को जीत, रूप चिदातम पाए॥
स्पर्शन का गुण रूक्ष, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं रुक्षस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 3॥

संयम दृढ संकल्प, जिसे गुण स्निग्ध नशाए।
आप स्निग्ध को जीत, निराकुलता सुख पाए॥
स्पर्शन का गुण स्निग्ध, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं स्निग्धस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 4 ॥

संयम प्रेम फुहार, जिसे कोमलता काटे।

कोमलता प्रभु जीत, कर्म की कड़ियाँ काटे॥
स्पर्शन का गुण नर्म, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं नर्मस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 5॥

संयम भरे हिलोर, जिसे कठोरता बाँधे।
कठोरता प्रभु जीत, आत्म कंचन सी साधे॥
स्पर्शन का गुण सख्त, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं कठोरस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 6॥

संयम है अनमोल, जिसे गुण हल्का रोके।
हल्का गुण प्रभु जीत, धनी हो अपने होके॥
स्पर्शन का लघु भाव, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं लघुतास्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 7॥

संयम है शक्ति अपार, जिसे गुण भारी लूटे।
भारी गुण प्रभु जीत, तभी भव बन्धन टूटे॥
स्पर्शन का गुरु भाव, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं गुरुतास्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 8॥

संयम है रसदार, जिसे गुण खट्टा खाले।
खट्टा गुण प्रभु जीत, हुए निज आत्म हवाले॥
रसना का गुण अम्ल, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अम्लता (येसीडिटी) स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥9॥

संयम आतम सार, जिसे गुण मीठा मारे।
मीठा गुण प्रभु जीत, रूप सर्वज्ञ छुआ रे॥
रसना का गुण मिष्ठ, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं मधुरता (शुगर) मधुमेहस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥10॥

संयम है अमरत्व, जिसे गुण कडुआ घाते।
कडुआ गुण प्रभु जीत, प्रेम-प्रसाद लुटाते॥
रसना का गुण कटुक, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं कटुकस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 11॥

संयम करुणा धार, जिसे गुण हरे कसैला।
प्रभु! कसैला जीत, तभी जग में यश फैला॥
रसना स्वाद कषाय, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं कसैलास्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 12॥

संयम चिच्चमत्कार, जिसे गुण तीक्ष्ण विनाशे।
प्रभु! तीक्ष्णता जीत, धर्म का तीर्थ विकासे॥
रसना का गुण तीक्ष्ण, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं तीक्ष्ण(चरपरा)स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥13॥

संयम आत्म सुगंध, जिसे कि सुगंध मिटाए।
सुगंध गुण प्रभु जीत, आत्म सौरभ महकाए॥

नासा-विषय सुगंध, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं सुगंधस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 14॥

संयम यश का इत्र, जिसे दुर्गंध दबा दे।
ईश! जीत दुर्गंध, शरण में रखो दया दे॥
नासा-गुण दुर्गंध, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं दुर्गन्धस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 15॥

संयम निज शृंगार, जिसे रंग काला ढाँके।
काला रंग प्रभु जीत, विश्व की सीमा लाँघे॥
चक्षु गुण रंग श्याम, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्यामवर्णस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 16॥

संयम है निर्ग्रन्थ, जिसे रंग नीला निगले।
नीला रंग प्रभु जीत, सभी से आगे निकले॥
चक्षु गुण रंग नील, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं नीलवर्णस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 17॥

संयम निज संस्कार, जिसे रंग पीला पटके।
पीला रंग प्रभु जीत, वसे दुनियाँ से हट के॥
चक्षु गुण रंग पीत, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं पीतवर्णस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 18॥

संयम सुन्दर रूप, जिसे रंग लाल लजाए।
लाल रंग प्रभु जीत, आत्म का नगर वसाए॥
चक्षु गुण रंग लाल, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं रक्तवर्णस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥19॥

संयम निज आकर्ष, जिसे रंग श्वेत सड़ाए।
श्वेत रंग प्रभु जीत, मोक्ष तक आत्म चढ़ाए॥
चक्षु गुण रंग श्वेत, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥20॥

संयम निज सुर ताल, जिसे 'सा'-षड्ज सुखाए।
'सा' सुर को प्रभु जीत, आत्म संगीत सुहाये॥
कर्ण-विषय सा-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं षड्ज-सा-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥21॥

संयम आतम साज, जिसे 'रे' ऋषभ रिसाए।
'रे' सुर को प्रभु जीत, स्वरूपी साधन पाए॥
कर्ण-विषय रे-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं ऋषभ-रे-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 22॥

संयम अक्षर माल, जिसे गांधार गँवाए।
'गा' सुर को प्रभु जीत, गुणी-गरिमा प्रकटाए॥

कर्ण-विषय गा-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं गान्धार-गा-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 23॥

संयम महिमावंत, जिसे 'मा' मध्यम मोहे।
'मा' सुर को प्रभु जीत, लोक के सिर पर सोहे॥
कर्ण-विषय मा-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं मध्यम-मा-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 24॥

संयम परम पवित्र, जिसे 'प' पंचम पीटे।
'प' सुर को प्रभु जीत, पुण्य के मारो छींटे॥
कर्ण-विषय प-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं पंचम-प-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥25॥

संयम पावन धर्म, जिसे 'ध' धैवत धौंके।
'ध' सुर को प्रभु जीत, मसाले निज के छौंके॥
कर्ण-विषय ध-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं धैवत-ध-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 26॥

संयम सुख निर्वाण, जिसे नि-निषाद निचोड़े।
नि-सुर को प्रभु जीत, नाम तक जग का छोड़े॥

कर्ण-विषय नि-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं निषाद-नि-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 27॥

संयम सौख्य अपार, जिसे मन मोर मरोड़े।
मन का मत्त मयूर, जीत निज नाता जोड़े॥
मन के विषय समस्त, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं मन-स्वभावविभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 28॥

पूर्णार्घ्य

यह संसार असार, असंयम दुख ही देता।
जो दुख का विष वृक्ष, काटने संयम लेता॥
ले तप त्याग कुठार, पाप-वन काट गिराये।
पाए सुख साम्राज्य, आत्म का वैभव पाए॥
करके यही विचार, तजे जग-इन्द्री नाते।
वीतराग नमिनाथ, बने सर्वोच्च कहाते॥
तुम्हें भेंट के अर्घ्य, आप सम होएँ जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

(दोहा)

इन्द्रिय जय की साधना, करती आत्म विभोर।
अतः प्रभु नमिनाथ जी, थामो भक्त की डोर॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति-इन्द्रियविषयस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्री नमिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

हृदय कमल में भक्त जो, धारें प्रभु का नाम।
उसे मुक्ति नमिनाथ दें, जिनको विनत प्रणाम॥
विश्व सुखों की बात क्या, मिले स्वयं निर्वाण।
उसी भाव से गुण कहें, यही भक्त कल्याण॥

(वीर/पंवारा/आल्हा/मात्रिकसवैया)

जय-जय-जय नमिनाथ जिनेश्वर, कितना सुन्दर तेरा नाम।
नाम आपका इतना सुन्दर, कितना दर्शन लगे ललाम॥
दर्शन इतना सुन्दर है तो, कितना सुन्दर होगा धाम।
धाम प्राप्त कर कौन चाहता, इससे दूर वसाना ग्राम॥1॥
बने आपसे मन यह मंदिर, हर्षित हुए हृदय के हाल।
देह बना देहालय जैसा, हँसे होंठ खुश होते गाल॥
गद्गद् हुई गात्र की गरिमा, जन्म समझते हम तो धन्य।
फिर भी क्यों कल्याण हुआ ना, यही सोचकर हम हैं खिन्न॥2॥
इसका कारण एक ही लगता, बने इंद्रियों के हम दास।
सब कुछ दुख तो सहन करें पर, धार सकें ना हम संन्यास॥
स्पर्शन के ही वशीभूत हो, गज दुर्दशा सहें दिन-रात।
रसना के वश फँसे जाल में, मछली तड़फे प्राण गँवात॥3॥
पुष्प गंध से दम घुट-घुट के, भौंरे मरते आकुल होएँ।
चक्षु के वश मरें पतंगे, जल-जलकर हो व्याकुल रोएँ॥
कर्ण स्वरों के वशीभूत हो, हिरण सर्प के होते नाश।
फिर पाँचों में फँसे मनुज का, क्या होगा ना सत्यानाश?॥4॥
बहुत तरह की पहली इन्द्री, करे स्पर्श जो आठ प्रकार।
कमल एक हजार योजन का, आयु वर्ष है दशक हजार॥
खुरपा सी रसना रस चखती, मुख्य रूप से पाँच प्रकार।

शंख मिले बारह योजन का, उत्कृष्ट आयु बारह साल॥5॥
तिल-पुष्पों सी घ्राण सूँघती, सुरभी-दुरभी दो विध खास।
तीन कोस की कुम्भी मिलती, उत्कृष्ट आयु दिन उन्चास॥
चक्षु इन्द्री मसूर जैसी, देखे मुख्य पाँच रंग राह।
मिलें एक योजन के भौंरे, उत्कृष्ट आयु है छह माह॥6॥
कर्णेन्द्री जब नली सरीखी, सुनें सात सुर मुख्य प्रकार।
पूर्वकोटि वय महामत्स्य की, फैले योजन एक हजार॥
दीप स्वयंभू रमण सिन्धु में, है उत्कृष्ट आयु अवगाह।
इनमें फँसे आज तक मन को, केवल मिली पतन की राह॥7॥
हे! नमिनाथ कृपा यह कर दो, इंद्रियों के न बनें गुलाम।
हमें इन्द्रियाँ नचा न पावें, मिले आपका प्यारा धाम॥
वीतरागविज्ञान मात्र को, केवल झुके हमारा शीश।
प्राण भले ही चले जाएँ पर, धर्म न जाए दो आशीष॥8॥
हाथ आपके चरण छुएँ बस, जीभ आपके गाए गान।
नासा ले चारित्र गंध बस, नयन निहारे जिन भगवान्॥
तत्त्व देशना कान सुने बस, श्रुत स्वरूप मन करे विचार।
हृदय देह का अर्घ्य भेंटकर, नमस्कार हो आत्म सुधार॥9॥
भोग बड़े से बड़े विश्व के, भक्ति आपकी करे प्रदान।
जो निर्माण भक्त का करके, कर निर्वाह करें निर्वाण॥
इसमें सभी न सक्षम इससे तुम्हीं आत्म का दो संन्यास।
'सुव्रत' तो बस करें नमोऽस्तु, आप बुला लो अपने पास॥10॥

(सोरठा)

काया का शृंगार, करना अपनी भूल थी।
तुम्हें देख नमिनाथ, काया सजना भूलती॥
हो निज का शृंगार, अतः रचाई अर्चना।
मिले भवोदधि पार, यही भक्त की प्रार्थना॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

नमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, नमिनाथ जिनराय॥
(पुष्पाञ्जलिं....)

===

नमिनाथ महिमा

श्री नेमिनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी।
श्री नेमिनाथ प्रभु कल्याणी, जिनके पूजक दुर्लभ प्राणी।
सम्मेदशिखर से मोक्ष गए विज्ञानी, सुख शान्ति प्रादाता स्वामी॥1॥
श्री नेमिनाथ का पाठ...।
प्रभु विजयराज के पुत्र रहे, वर्मिला माँ की संतान रहे।
हो मिथिलापुर के भगवन अंतर्यामी, हो भक्तों के वरदानी॥2॥
श्री नेमिनाथ का पाठ...।
प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥3॥
श्री नेमिनाथ का पाठ...।
आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥4॥
श्री नेमिनाथ का पाठ...।
बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी ध्यानी॥5॥
श्री नेमिनाथ का पाठ...।

===

श्री नमिनाथ भगवान की आरती-1

नमिनाथ की करके आरती, हम तो नाँचें रे।
हम क्या नाचें बाबा सारी, दुनियाँ नाँचें रे॥
पूरी ये शहडोल नगरिया, झूमे नाँचे रे।
नमिनाथ की करके आरती, हम तो नाँचें रे॥1॥
पूज्य कुठरिया वाले अपने, रहे बड़े बाबा।
परम पूज्य नमिनाथ हमारे, देवों के देवा॥
जिनकी भक्ति करके सबकी, किस्मत जागे रे।
पूरी ये शहडोल नगरिया, झूमें नाँचें रे॥
नमिनाथ की करके आरती, हम तो नाँचें रे॥2॥
अतिशयकारी परिकरधारी, तीन छत्र धारी।
पद्मासन सिंहासन वाली, मूरत मनहारी॥
रोग शोक दुख दूर भगाए, सुख धन बाटे रे।
पूरी ये शहडोल नगरिया, झूमें नाँचें रे॥
नमिनाथ की करके आरती, हम तो नाँचें रे॥3॥
विजयराज के राज दुलारे, मिथिलापुर अवतारे।
वर्मिला[1] माँ के नयन सितारे, जग पालनहारे॥
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, कर्म नशा के रे।
पूरी ये शहडोल नगरिया, झूमें नाँचें रे॥
नमिनाथ की करके आरती, हम तो नाँचें रे॥4॥
देवों ने अतिशय दिखला के, प्रतिमा प्रकटाए।
ढोल नगाड़े बजा-बजा के, दीपक जलवाए॥
भगवन बड़े चमत्कारी सो, महिमा वाँचें रे।
पूरी ये शहडोल नगरिया, झूमें नाँचें रे॥
नमिनाथ की करके आरती, हम तो नाँचें रे॥5॥

1. वप्पिला

रोते-रोते आने वाले, हँसकर जाते हैं।
खाली झोली लाने वाले, भरकर जाते हैं॥
वो आराम यहाँ पाते जो, थक कर आएँ रे।
पूरी ये शहडोल नगरिया, झूमें नाँचें रे॥
नमिनाथ की करके आरती, हम तो नाँचें रे॥6॥
मुँह मांगा वरदान मिला है, तेरी भक्ति से।
आतम परमातम बन जाए, तेरी शक्ति से॥
'सुव्रत' आतम विद्या पाके, मौज मनाएँ रे।
पूरी ये शहडोल नगरिया, झूमें नाँचें रे॥
नमिनाथ की करके आरती, हम तो नाँचें रे॥7॥

===

श्री नमिनाथ भगवान की आरती - 2

छूम छूम छना ननना बाजे-बाबा करूँ आरतिया।
परम पूज्य नमिनाथ हमारे, अतिशयमय शहडोल पधारे।
पद्मासन के धारी- बाबा करूँ आरतिया॥ 1॥
विजयराज के राज दुलारे, वर्मिला माँ के नयन सितारे।
मिथिलापुर अवतारे-बाबा करूँ आरतिया॥ 2॥
देवों ने अतिशय दिखलाये, धरती से प्रतिमा प्रकटाए।
सबके चित्त चुराए-बाबा करूँ आरतिया॥ 3॥
कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।
मुक्तिवधू के स्वामी- बाबा करूँ आरतिया॥ 4॥
दुख संकट भय भूत मिटाओ-ऋद्धि-सिद्धि सुख शान्ति दिलाओ।
'सुव्रत' को भी तारो- बाबा करूँ आरतिया॥ 5॥

===

नमिनाथ चालीसा (शहडोल)

(दोहा)

भारत में शहडोल के, परम पूज्य नमिनाथ।
अतिशयमय अरिहंत जो, देते सबका साथ॥
जिन्हें सुरासुर पूजते, भजते हैं दिन-रात॥
सो चालीसा हम कहें, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

(चौपाई)

जय-जय-जय नमिनाथ जिनन्दा, अतिशयकारी परमानन्दा॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, प्रशान्त मुद्रा जिन-उपदेशी॥1॥
पद्मासन सिंहासन धारी, तीन छत्रमय परिकर धारी॥
देव देवियों सबके स्वामी, जग कल्याणी अंतरयामी॥ 2 ॥
नाम आपका तारणहारा, हमको है प्राणों से प्यारा॥
चैत्य आपका चित्त चुराए, हमको अपने पास बुलाए॥ 3 ॥
हम ही क्या सारा संसारा, हे भगवन! है दास तुम्हारा॥
दर्शन पूजन करे आपकी, दूर भगाएँ कथा पाप की॥ 4 ॥
आशीर्वाद आपका पाने, हम भी आएँ कथा सुनाने॥
पहले ये थी विराट नगरी, विराट राज की धार्मिक डगरी॥ 5 ॥
तब पाण्डव अज्ञातवास में, यहाँ पधारे गुप्त वास में॥
तब बलवान भीम जल खोजे, कुण्ड तीन सौ पैंसठ खोदे॥ ६॥
कहें डोल सब कुण्ड कुआ से, तब शहडोल प्रसिद्ध हुआ ये॥
कुछ सदियों के बाद यहाँ पर, आकर जैनी वसे यहाँ पर॥ 7 ॥
पैसा पाकर तो थे सुखिया, पर जिनराज बिना थे दुखिया॥
जिनदर्शन बिन भोजन कैसे, कर लें वो जैनी हैं कैसे ?॥ 8 ॥
तब तो देव दिखाये माया, सपना किसी जैन को आया॥
खोदो धरती मुझे निकालो, फिर मेरा मंदिर बनवा लो॥ 9 ॥

जब थोड़ी धरती खोदी थी, भगवन मूरत यहीं दिखी थी॥
पर वह तब तो निकल न पाई, सो देवों ने युक्ति सुहाई॥ 10 ॥
एक सूत का धागा लेकर, मुझे निकालो लाओ ऊपर॥
चमत्कार फिर हुआ अनोखा, जिनशासन का अतिशय चोखा॥ 11 ॥
धागे से प्रभु ऊपर आए, जैनी फिर मंदिर बनवाए॥
छोटी सी थी एक कुठरिया, सुंदर सी मंदिर सी बढ़िया॥ 12 ॥
जिसमें प्रभु नमिनाथ विराजे, गूँज उठे तब गाजे-बाजे॥
हुए कुठरिया वाले तब से, पूज्य बड़े बाबा हम सबके॥ 13 ॥
तब से यह शहडोल नगरिया, बनी सभी की धर्म डगरिया॥
दीप जला के देव देवियाँ, ढोल बजा के करें भक्तियाँ॥ 14 ॥
बनी तीर्थ ये पावन माटी, भक्त जनों को खूब लुभाती॥
विद्या गुरु जब यहाँ पधारे, प्रभु-दर्शन कर दिए इशारे॥ 15 ॥
बना तीन शिखरों का मंदिर, कुल छह वेदी पर श्री जिनवर॥
पूर्ण करायी गजरथ फेरी, दूर हुई सब थकान मेरी॥ 16 ॥
गुरु की ये वाणी सुखदाई, करो वंदना पुण्य कमाई॥
कर अभिषेक शान्ति धाराएँ, मनोकामना पूरी पाएँ॥ 17 ॥
पूजक को सुख शान्ति दिलाए, ऐसा अतिशय क्षेत्र सुहाए॥
लगे हृदय सा न्यारा-न्यारा, नमिनाथ का मंदिर प्यारा॥ 18 ॥
ये तीरथ है पावन अपना, पूरा करता है हर सपना॥
सो इसकी रज शीश चढ़ा लो, अपना सोया भाग्य जगालो॥ 19 ॥
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि दाता, मोक्ष मार्ग सुख शान्ति प्रदाता॥
'सुव्रत' यहाँ-वहाँ न जाओ, नमिनाथ की विद्या ध्याओ॥ 20 ॥

(सोरठा)

नमिनाथ जिनराज, हम सबके भगवान जी।
सो नमोऽस्तु है आज, करो कृपा दो ध्यान भी॥
पढें सुनें जो लोग, चालीसा नमिनाथ का।
बनें सुखों के योग, शुभाशीष हो आपका॥

===

निर्वाण काण्ड (नवीन)

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
करके नमोऽस्तु हम कहें, पूज्यकाण्ड निर्वाण॥

(चौपाई)

अष्टापद से आदि-अनन्त, भरत बाहुबलि कर्म हनन्त।
बाल बालमहा नागकुमार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥1॥
वासुपूज्य चम्पापुर त्याग, महावीर पावापुर त्याग।
मुक्त हुए कर निज उद्धार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥2॥
गिरिनारी से नेमीनाथ, शंबु प्रद्युम्न अनिरुद्ध साथ।
कोटि बहत्तर सत सौ पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥3॥
श्री सम्मेदशिखर से शेष, तीर्थंकर प्रभु बीस अशेष।
मोक्षमहल के खोले द्वार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥4॥
नगर तारवर से वरदत्त, मुनिवरांग मुनि सागरदत्त।
साढ़े तीन कोटि भव पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥5॥
सात-सात बलभद्र विशेष, आठ कोटि यदुवंशि नरेश।
गजपंथा से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥6॥
राम पुत्र लव कुश भव छोड़, लाट देश नृप पाँच करोड़।
पावागढ़ से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥7॥
पाण्डव भीम युधिष्ठिर पार्थ, द्रविड़ आठ कोटि नृप साथ।
शत्रुंजय से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥8॥
राम हनू सुग्रीव गवाक्ष, गवय नील महानील जिनाक्ष।
निन्यान्वें कोटि तुंगी पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥9॥
नंग अनंग कुमार प्रसिद्ध, साढ़े पाँच करोड़ सुसिद्ध।
सोनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥10॥

रावण सुत सिद्धोदय छोड़, आदिक साढ़े पाँच करोड़।
रेवातट नेमावर पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥11॥
रेवा पार्श्व सिद्धवरकूट, साढ़े तीन कोटि तज झूठ।
दो चक्री दस कामकुमार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥12॥
बड़वानी की दक्षिण पीठ, कुंभकर्ण अरु इन्दरजीत।
चूलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥13॥
स्वर्ण वीर मुनि गुण-मणिभद्र, नदीचेलना पूरव ह्रद्द।
पावागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥14॥
फलहोड़ी के पश्चिम भाग, शिखर द्रोणगिरि परभव त्याग।
गुरुदत्तादिक मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥15॥
दिशा अचलपुर की ईशान, साढ़े तीन कोटि मुनि जान।
मुक्तागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥16॥
वंशस्थल के पश्चिम घाट, कुलभूषण देशभूषण भ्रात।
कुंथलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥17॥
दशरथ राज पाँच सौ पुत्र, हुए कलिंग देश से मुक्त।
कोटिशिला से कोटि पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥18॥
गुरु वरदत्तादिक मुनि पाँच, पाकर समवसरण प्रभु पार्श्व।
नैनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥19॥
राजगृही से विद्युतचोर, अष्टापद से अंजनचोर।
गौतम गए गुणावा पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥20॥
मथुरा से श्री जंबूस्वामि, कुण्डलपुर से श्रीधर नामि।
सेठ सुदर्शन पटना बिहार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥21॥
अहारजी से मदनकुमार, विस्कंवल पहुँचे शिवद्वार।
सुप्रतिष्ठित गोपाचल पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥22॥

यम धन आदिक संत प्रसिद्ध, शौरि-बटेश्वर से जो सिद्ध।
कनकगिरि से श्रीधर राज, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥23॥
जग में जितने भू-निर्वाण, गुफा नदी वन कन्दर थान।
भू नभ जल से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥24॥
कर निर्वाणकाण्ड के गान, 'सुव्रत' चाहें निज निर्वाण।
हो जाए जग का उद्धार, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥25॥

(दोहा)

जो पाए निर्वाण सुख, सिद्ध अनन्तानन्त।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र भगवंत॥

===

जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥1॥
दुनियाँ हमें कभी ना रुचती, इसे छोड़ना हैं।
माया ममता के हर बंधन, हमें तोड़ना है॥
सदा आपके साथ रहें ये, भाव बनाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥2॥
यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥3॥

दर्शन बिना आपके प्रभु हम, चैन न पाएंगे।
बिना आपके नयन हमारे, आँसु बहाएंगे॥
बिन माता के बच्चे जैसे, रह ना पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥4॥
चंदा बिना चकोरों को ज्यों, कितनी पीड़ा हो।
बिना स्वाति की बूँदों जैसे, दुखी पपीहा हो॥
मिट्ठू-मिट्ठू जैसी रटना, भक्त लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥5॥
बिना गाय के बछड़े जैसे, बहुत रँभाते हैं।
बिना श्वास के प्राणी जैसे, जन्म गँवाते हैं॥
बिना आपके हम भी भगवन्, कष्ट उठाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥6॥
सदा आपके दर्शन पाएँ, यही भावना है।
चरणों में स्थान मिले बस, यही प्रार्थना है॥
अपने जैसा हमें बना लो, आश लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥7॥
सुबह-सुबह जब आँख खुले तो, दर्श आपका हो।
मुँह खोलें तो होठों पर बस, नाम आपका हो॥
बिना आपके अपना जीवन, सोच न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥8॥
बिना नीर के मछली थोड़ी, सासें भी ले ले।
बिन माता के बालक थोड़ा, जीवन भी जी ले॥
आप बिना हम जियें तो कैसे, सो घबराते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥9॥

तुम्हें भूल के दर-दर भटकें, विरह वेदना से।
अब तो करुणा जल के बादल, जल्दी बरसा दे॥
तेरी छत्र-छाँव में हम भी, आश्रय पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥10॥
हम से तुमरे लाखों तुम सा, कौन हमारा है।
हम हैं कमल आप हो सूरज, अतः पुकारा है॥
जैसा रखना रख लो हम तो, शीश झुकाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥11॥
आप बिना हम आकुल-व्याकुल, पागल के जैसे।
कभी मेघ से कभी पवन से, भेजें संदेशे॥
मिलन महोत्सव अपना हो यह, पत्र भिजाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥12॥
जग के रिश्ते-नाते स्वार्थी, मात्र झमेले हैं।
टूटी कमर हमारी ये तो, दुख के रेले हैं॥
बनकर सगे दगे देते हम, झेल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥13॥
पशुओं में बँधकर दुख पाए, नरकों में बिलखे।
देव देवियों के भोगों में, जीवन भर उलझे॥
नर पर्याय सफल करने को, तुमको ध्याते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥14॥
खेल-खेल में बचपन बीता, तरुणी में यौवन।
हाय! बुढ़ापा है दुखदाई, कहाँ मिलें भगवन्॥
करो हमारी आप सुबह हम, सो ना पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥15॥

घरवाली घर तक की साथी, दर तक माँ साथी।
पुत्र-मित्र रिश्ते नाते सब, मरघट तक साथी॥
पर प्रभु के सम्बन्ध मोक्ष तक, साथ निभाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥16॥
श्रद्धा से पत्थर मूरत में, प्रभु भगवान दिखें।
श्रद्धा से ही ईश्वर अल्ला, प्रभु श्रीराम मिलें॥
श्रद्धा की आखियाँ खुलवाने, आश लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥17॥

समाधि भावना

जिनेन्द्र प्रभु को करके नमोस्तु, भाव हमारा हो।
नाथ आपके चरण-शरण में, मरण हमारा हो॥
सदा आपकी छत्र-छाँव को, हम ललचाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥18॥
संवेदनमय श्रुत नचनों से, ध्याएँ भगवन् जी।
सदा शास्त्र अभ्याय करें हम, सन्त समागम भी ॥
साधुजनों के गुण गाकर हम, दोष नशाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥19॥
सबसे हित मित प्रिय हम बोलें, आतम को ध्याएँ।
मोक्षमार्ग से प्रेम बढाएँ, प्रभु के गुण गाएँ॥
जब तक मोक्ष न पाएँ तब तक, तुमको ध्याते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥20॥
गुरु प्रभु चरणों में जिनवाणी माँ की गोदि में।
हो संन्यास मरण भव-भव में, सम्यक् बोधि में ॥

जनम मरण के पाप नशाने, तुम्हें बुलाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥21॥
कल्पवृक्ष सम जिन-चरणों की, बचपन से सेवा।
अब तक जो की उसका फल यह, हम चाहें देवा॥
मरण समय तक णमोकर को, भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥22॥
नाथ! आपके चरण हमारे, रहें हृदय मन में।
हृदय हमारा नाथ! आपके, नित हो चरणन में॥
जब तक हम निर्वाण न पाएँ, ये ही ध्याते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥23॥
नाथ! आपकी भक्ति अकेली, सारे पाप हरे।
पुण्य सम्पदा मुक्ति प्रदाता, तन मन स्वस्थ करे॥
हे! जिनवर बस भक्त आपके, कर्म नशाते हैं। पुनः
आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥24॥
नाथ! आपके चरणकमल तो, भव का भ्रमण हरें।
अतः हमें भी शरण दीजिए, हम यह विनय करें॥
वीतराग सम हुए न हों सो, शीश झुकाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥25॥
नाथ! आपके चरण-शरण हम, भव-भव में पाएँ।
भले दुखी दारिद्र रहें पर, तुम्हें न विसराएँ॥
तुमको पाने दुनियाँ के पद, हम ठुकराते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥26॥
नाथ! आपकी छत्र छाँव तो, हमको प्यारी है।

चरण शरण में मरण समाधि, की तैयारी है॥
करें समाधि मरण यही हम, आश लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥27॥
कष्ट दूर हों कर्म चूर हों, रत्नत्रय पाएँ।
सुगति गमन हो वीर मरण हो, जिनगुण धन पाएँ
'सुव्रत' बोधि-समाधि करने, भाव बनाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥28॥

दर्शन पाठ

दर्शन श्री देवाधिदेव का, दर्शन पाप हरे।
दर्शन है सोपान स्वर्ग का, दर्शन मोक्ष करे॥
साधु वंदना जिनदर्शन से, पाप नशाते हैं।
छिद्र सहित कर में ज्यों जल कण, ठहर न पाते हैं।
जाकर आते हैं...॥29॥
पद्मराग मणि सम उज्ज्वल प्रभु, वीतराग मुख देख।
जिनदर्शन से जन्म-जन्म के, नशते पाप अनेक॥
भव तम नाशक जिनसूरज ही, हृदय खिलाते हैं।
ताप नशाने ही जिनचंदा, सुख बरसाते हैं॥
जाकर आते हैं...॥30॥
जीवादिक सब तत्त्व बताएं ए अष्टगुणी सागर।
नग्न दिगम्बर प्रशांत रूपी, नमो नमो जिनवर॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, तुमको ध्याते हैं।
हे!देवाधिदेव जिनेश्वर, विनय दिखाते है॥
जाकर आते हैं...॥31॥

बिना आपके शरण न कोई, शरण आप ही हो।
सो प्रभु करो हमारी रक्षा, रक्षक आप हि हो॥
तीन काल में वीतराग से, देव न पाते हैं।
सो करुणाकर! करुणा कर दो, भक्त चाहते हैं॥
जाकर आते हैं...॥32॥

भव-भव में जिनभक्ति सदा हो, हो जिनभक्ति सदा।
जैनधर्म बिन चक्री का पद, चाहें हम न कदा॥
दुखी दरिद्र रहें पर अपना, धर्म चाहते हैं।
जिनदर्शन से रोग सब, भक्त नशाते हैं॥
जाकर आते हैं...॥33॥

नाथ! आपके चरण कमल के, दर्शन करने से।
मुनि 'सुव्रत' के दोनों नयना, लगें सफल जैसे॥
तीन लोक के तिलक तुम्हे हम, शीश झुकाते हैं।
भवसागर का जल चुल्लू भर, भक्त बचाते हैं॥
जाकर आते हैं...॥34॥

===

आप मेरे शब्द
आप ही मेरे अर्थ हैं
हे गुरुवर!
आपके बिना
मेरे प्राण भी व्यर्थ हैं।

जिनवाणी स्तुति

अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्दों अर्थों की।
आगम शास्त्र पठन पाठन में, हम सब भक्तों की॥
सरस्वती माँ हर त्रुटियों की, क्षमा चाहते हैं।
हमको केवलज्ञान दान दो, भक्त चाहते हैं
जाकर आते हैं...॥
हे श्रुतदेवी! चिंतामणि सम, चिंतित वस्तु दो।
वंदन करने वाले हमको, बोधि समाधि दो॥
निज स्वरूप परिणाम विशुद्धि धर्म चाहते हैं।
मिले मोक्ष सुख सिद्धि संपदा, 'सुव्रत' ध्याते हैं॥
जाकर आते हैं...॥

(कायोत्सर्ग...)

जिनवाणी स्तुति

(ज्ञानोदय)

अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्द रेफ या अर्थों की।
शास्त्र पठन-पाठन में जो भी, कमियाँ रहीं अनर्थों की॥
आलस भूल कषायें मेरी, क्षमा करें कल्याणी माँ।
ज्ञान-दीप जलवाकर मेरा, भला करें जिनवाणी माँ॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र नवकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

(कायोत्सर्ग...)

===

आचार्य वंदना

लघु सिद्ध भक्ति

नमोऽस्तु पौर्वाह्णिक/आपराह्णिक आचार्य-वन्दना-क्रियायां, पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकलकर्मक्षयार्थं,भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री-सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(९ बार णमोकार)

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलहु-मव्वावाहं,अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तव-सिद्धे, णय-सिद्धे, संजम-सिद्धे,चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य,सिद्धे सिरसा णमंसामि॥

इच्छामि भंते। सिद्ध-भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्प मुक्काणं-अट्ठगुण-संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं, अतीदा-णागद-वट्टमाण-कालत्तय-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं, णिच्च-कालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं समाहि-मरणं, जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं।

लघु श्रुत भक्ति

नमोऽस्तु पौर्वाह्णिक/आपराह्णिक श्री आचार्य-वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकलकर्मक्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री-श्रुतभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(९ बार णमोकार)

कोटिशतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्य-शीतिस्-त्र्यधिकानि चैव।
पञ्चाश-दष्टौ च सहस्र-संख्य-मेतच्-छुतं पञ्च-पदं नमामि॥
अरहंत - भासियत्थं - गणहर - देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्ति-जुत्तो, सुद-णाण-महोवहिं सिरसा॥

इच्छामि भंते ! सुद-भत्ति-काउसग्गो कओ तस्सालोचेउं-अंगोवंग-पइण्णय-पाहुडय-परियम्मि-सुत्त पढमाणि-ओग-पुव्वगय-चूलिया चेव-सुत्तत्थय-थुइ-धम्म-कहाइयं, सया णिच्च-कालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं जिणगुण-संपत्ति होउ-मज्झं।

लघु आचार्य भक्ति

नमोऽस्तु पौर्वाह्णिक/आपराह्णिक आचार्य-वन्दना-क्रियायां, पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकलकर्मक्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री-आचार्य भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(९ बार णमोकार)

श्रुतजलधि-पारगेभ्यः,स्व-पर-मत-विभावना-पटुमतिभ्यः।
सुचरित-तपोनिधिभ्यो, नमो गुरुभ्यो-गुण-गुरुभ्यः॥
छत्तीस-गुण-समग्गे, पंच-विहाचार-करण-संदरिसे।
सिस्सा-णुग्गह-कुसले, धम्मा-इरिये सदा वंदे॥
गुरु-भत्ति-संजमेण य, तरंति संसार-सायरं घोरम्।
छिण्णंति अट्ठकम्मं, जम्मण-मरणं ण पावेंति॥
ये नित्यं-व्रत-मंत्र-होम-निरता, ध्यानाग्नि-होत्राकुलाः।
षट्कर्माभिरतास्-तपो-धनधनाः,साधु-क्रियाः साधवः॥
शील-प्रावरणा-गुण-प्रहरणाश्-चन्द्रार्क-तेजोऽधिकाः।
मोक्ष-द्वार-कपाट-पाटन-भटाः, प्रीणंतु मां साधवः॥

गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञान-दर्शन-नायकाः।
चारित्रार्णव-गम्भीरा, मोक्षमार्गोपदेशकाः॥

इच्छामि भंते! आइरिय भत्ति-काउसग्गो कओ, तस्सालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं, पञ्च-विहाचाराणं, आइरियाणं, आयारादि-सुदणाणो-वदेसयाणं उवज्झायाणं, ति-रयण-गुण-पालण-रयाणं सव्वसाहूणं, णिच्च-कालं, अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं-समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

(नोट- सुबह १८ बार एवं संध्या आचार्य वंदना में ३६ बार णमोकार मंत्र पढ़े)

विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे,
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थसिद्धि-प्रदम्।
ज्ञान-ध्यान-तपोभिरक्त-मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं,
साकारं-श्रमणं-विशाल-हृदयं, सत्यं-शिवं-सुन्दरं॥

(शार्दूल विक्रीड़ित)

श्री विद्यामुनि धर्मरूप सुगुरु, र्विद्या नमामि प्रियं।
विद्या नाशति सर्व कर्म दुःखान्, विद्ये नमो भगवते॥
विद्योऽपैति सुखी भवन्ति न जनाः, विद्यो यशो वर्द्धतु।
विद्याद्रौस्वरतिर्ददाति सुपदं, हे विद्य! माम् पालय॥

(यहाँ विद्या शब्द का प्रयोग आकारान्त पुल्लिंग के रूप में किया गया है)

वैरागी विजयी विशाल हृदयी, ज्ञानी महात्मा प्रभु।
तेजस्वी तप त्याग तीर्थ तपसी, त्यागी जितेन्द्री गुरु॥
कल्याणी सदयी उदार विनयी, दाता गुरू को भजूँ।
विद्यासागर श्रेष्ठ संत गुरु को, पूँजू नमोऽस्तु करूँ॥

===